श्री ५

श्री गनेसाय नंमो:॥ ॥प्रन मेसी रसा विस्नु त्रिलोक्याधि
पतिप्रभु ॥नाना सास्त्रो धितं वक्षे राज नी ति समु च ये॥
॥१॥त्रि भु व न को अधि पति: श्री ना रा येन देव ता लाई न
मस्कार गरि छ रै प्रा भवा र नी का सि हा ष्या राज नी
ति स्नीय स मभं दछु छ्न॥ ॥अधी त्ये व मिदं ताञ
न रो ज्ञा ज्ञान ति सत तो॥ धर्म उ प दे स विख्या तं कार्ये
का र्या ह सु भा सुभम्॥२॥जो म नुष्य ले नी रस व

१ वेनादिकृत कोमात्र पर्द हु रः उक्त वेनत तोज्ञान
पाक्षुनोरः ॥ धर्मअधर्म हुवा मे कु कर्म युक्तार
मलोमंनदो वि नेला म नी उ पदेसादे ने हो ॥ ॥ १
तदहं सं पूर्व दृष्टो पि न लानं हित का मया ॥ तेना वला
तपावेनः सर्व झे तुं हितकांक्षया ॥ तनौ विज्ञो प्रवर्धि
तेवः पापि वो हित कारनी ॥ २ ॥ मनुषेणाहः धर्मविज्ञ
कुरुलगा दुःखनः ज्ञानी मनुषेतो हैन सात्र पाकृत न कुष्ठे

विनसहताहि नेजि पातेः नचा सा इन सास्त्र लेषि पा रोग
र्धनु ॥ मलसा स्त्र पूर्व से झाहि मानके नतु वा क्षत
ज्ञाने विज्ञा तमा वैन ॥ सर्व झे तु हिता पेते ॥ ८ ॥ मह
सास्त्र का कले वा नु वे दि बि ते भाय का पे मूल सास्त्र
हे मनीश्वर मनुष्य लो पा सुत ल्लो ते स मनुष्य लो कृत भाव
कवर्त्तमा न कुन्दला ॥ ॥ मूर्ख लि खा पढे सेनः ज्ञानी मर
वेन्द्रे ॥ छिवतासे पुपो झुने पंखि तौ पदे वदंते ॥ ५ ॥
मुर्खे ता लिलाई उपदेश दिन्या: जो वेदहरु कि इ ज्ञानी
लाई ज्ञान दिन्या: पे कथा र वित क्ति तय को सत्र चितावि

श्वास गच्छा: सोंहि छुटे नी भ पाप नचा: दुरव पावे नांभ
।नु नी भी गहरी पनौ पं छिं ते ह सकल्प ॥८॥ लिखि
सह मिहत्र के कबी नी नाव लिखि दाते ॥६॥ जौम दुष्यगु
नी तन को सं प्रहगई हि ए ॥७॥ जानीजन के कौ अ तिं व्रा हि
२ लिन छुर ॥ कुल व दृढि लगा मित ता। दिगानी-रम ते ख म २
दु वे कन के लै औं प दा व च्दे हैनं ॥ ॥७॥ मता नी
भूत गानूं भेद्यो ता नेरवों तै जो स्त्रीवां पान कुलानां वि
विश्वास नि गाच्छा देवु: ॥१॥ बहुला स वे मत वाला हा
निस्त्री तन जा तिरा ता पे तिं जा ना सं ता ॥ विश्वास न नांदु

।विश्वास गारे हादि: जिन तानु कोरे रहुदेन ॥ॐ दिनां सह वि
श्वासी: पौन दुकतु अिछा ति ॥ सर्वधा ग्रे पु सं सु पु: षटी
तष्टति सुखै पै सो ॥२॥